भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर(2026-27)

कक्षा-दसवीं	**विभाग: हिंदी**	**Date – 07-04-26**
कार्य-पत्रिका -3	**विषय: अर्थग्रहण**	**Note: Pl. file in portfolio**

नाम: ______________________अनुभाग: _____अनुक्रमांक: _____दिनांक: _____

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

वास्तव में मनुष्य स्वयं को देख नहीं पाता। उसके नेत्र दूसरों के चरित्र को देखते हैं, उसका हृदय दूसरों के दोषों को अनुभव करता है। उसकी वाणी दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण कर सकती है, किंतु उसका अपना चरित्र, उसके अपने दोष एवं उसके अवगुण, मिथ्याभिमान और थोथे आत्म-गौरव के काले आवरण में इस प्रकार प्रच्छन्न रहते हैं कि जीवन-पर्यंत उसे दृष्टिगोचर ही नहीं हो पाते। इसीलिए मनुष्य स्वयं को सर्वगुण-संपन्न देवता समझ बैठता है। क्षुद्र व्यक्ति एवं मस्तिष्क, अपनी क्षुद्र सीमा से परे किसी भी वस्तु का सही मूल्य आँकने में असमर्थ रहते हैं। इसलिए व्यक्ति स्वयं के द्वारा जितना छला जाता है, उतना किसी अन्य के द्वारा नहीं। आत्म-विश्लेषण करना कोई सहज कार्य नहीं। इसके लिए अत्यंत उदारता, सहनशीलता एवं महानता की आवश्यकता होती है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि आत्म-विश्लेषण मनुष्य कर ही नहीं सकता। अपने गुणों-अवगुणों की अनुभूति मनुष्य को सदैव रहती है। अपने दोषों से वह हर पल, हर क्षण अवगत रहता है, किंतु अपने दोषों को मानने के लिए तैयार न रहना ही उसकी दुर्बलता होती है और यही उसे आत्म-विश्लेषण की क्षमता नहीं दे पाती। उसमें इतनी उदारता और हृदय की विशालता ही नहीं होती कि वह अपने दोषों को स्वयं देख कर कह सके। इसके विपरीत पर-निंदा एवं पर-दोष-दर्शन में अपना कुछ नहीं बिगड़ता, उलटे मनुष्य आनंद अनुभव करता है, परंतु आत्म-विश्लेषण करके अपने दोष देखने से मनुष्य के अहंकार को चोट पहुँचती है।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए:- (1 x 3 = 3)

(क) मनुष्य स्वयं को क्यों नहीं देख पाता?

(i) उसके नेत्र दूसरों के चरित्र को नहीं देखते।

(ii)उसका हृदय दूसरों के दोषों को अनुभव नहीं करता।

(iii)उसकी वाणी दूसरों के गुणों का विश्लेषण कर सकती है।

(iv)उसका अपना चरित्र, अपने दोष और झूठा दंभ उसे जीवन भर दिखाई नहीं देते।

(ख) मनुष्य स्वयं को सर्वगुणसंपन्न देवता क्यों समझता है?

(i)उसका अपना चरित्र एवं उसके अपने अवगुण मिथ्याभिमान से ढके रहते हैं।

(ii)वह अन्यों के द्वारा छला जाता है।

(iii)वह किसी भी वस्तु का सही मूल्य आँकने में समर्थ होता है।

(iv)वह आत्म-विश्लेषण में निपुण है ।

(ग) निम्नलिखित में से सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक का चयन कीजिए:

(i)परनिंदा (ii)सर्वगुण-संपन्न देवता

(iii)आत्म-विश्लेषण (iv)क्षुद्र सीमा

गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(घ) परनिंदा क्यों सरल है? (2)

____

____

____

____

____

(ङ) आत्म-विश्लेषण के लिए क्या आवश्यक है? (2)

____

____

____

____

____